इकाई 13 गांधीवादी उपागम

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 शान्ति के गांधीवादी उपागम का आधार

13.2.1 सत्याग्रह

13.2.2 अहिंसा

13.3 युद्ध के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण

13.4 गांधी की शान्ति विषयक सोच

13.5 शान्ति के गांधीवादी उपागम के मुख्य तत्व

13.5.1 व्यक्ति तथा उसकी मनोवृत्ति पर बल

13.5.2 एक नवीन जीवन शैली एवं संस्कृति की आवश्यकता

13.5.3 नैतिक समाधान की खोज

13.5.4 राष्ट्रवाद के साथ मानवतावाद को जोड़ना

13.5.5 अहिंसावादी राज्यों के लिए 6-सूत्री कार्यक्रम

13.5.6 निरस्त्रीकरण को प्रोत्साहन

13.5.7 परमाणु अस्त्रों के विरुद्ध संघर्ष

13.5.8 अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा विश्व संघ

13.5.9 अहिंसावादी सेना तथा शान्ति सेना

13.5.10 आक्रमणकारी के साथ असहयोग

13.5.11 पारिस्थितिकी मामलों का संबोधन

13.5.12 विकास प्रतिमान में सुधार

13.5.13 आंतरिक मतभेदों को शान्त करना

13.5.14 आर्थिक शोषण का अन्त

13.5.15 शान्ति प्रक्रिया में जन-भागीदारी

13.6 शान्ति के गांधीवादी उपागम का आलोचनात्मक मूल्यांकन

13.7 सारांश

13.8 अभ्यास प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

महात्मा गांधी (1869-1948) की गणना मानव इतिहास की महानतम विभूतियों में होती है। गांधी के व्यक्तित्व एवं योगदान के अनेक पहलू हैं - एक विशिष्ट जन नेता, समाज-सुधारक, शान्तिवादी और सबसे बढ़कर सत्य तथा अहिंसा का एक मसीहा। गांधीजी अहिंसा, शान्ति, भाईचारा तथा सहिष्णुता के लिए जिए, संघर्ष किया तथा इन्हीं आदर्शों के लिए अपना जीवन भी दे दिया। उन्होंने भारत में अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध असहयोग, सविनय अवज्ञा, उपवास, हड़ताल आदि नवीन तकनीक अपनाईं तथा राजनीतिक गतिशीलता/संघटन की अवधारणा में नए आयाम जोड़ दिए।

यद्यपि गांधीजी के समाज तथा राजनीति पर विचारों से सभी भली-भाँति परिचित हैं, परन्तु शान्ति तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर उनके विचार क्या थे - इसकी जानकारी व्यापक नहीं है। ऐसा समझा जाता है कि गांधीजी ने विश्व राजनीति पर ज्यादा रुचि नहीं रखी क्योंकि वे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के संचालन तथा भारतीय समाज व ग्रामीण समस्याओं के समाधान में व्यस्त रहे। परन्तु यह एक भ्रमित विचार है। गांधीजी ने विश्व राजनीति की कभी उपेक्षा नहीं की। उन्होंने समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर प्रायः अपने विचार अभिव्यक्त किए, तथा नई विश्व व्यवस्था के संदर्भ में स्पष्ट एवं विलक्षण परिकल्पना भी की। सत्य तो यह है कि गांधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की कल्पना तथा संचालन एक विस्तृत अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में ही किया।

फिर भी, गांधी कोई सिद्धान्तशास्त्री या एक व्यवस्थित लेखक नहीं थे। उन्होंने अपने द्वारा व्यक्त अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर विचारों को विस्तार से नहीं समझाया और न ही कोई शान्ति का विशिष्ट सिद्धान्त ही दिया। युद्ध तथा शान्ति पर उनके विचार उनके लेखों तथा विभिन्न व्यक्तियों को दी गई टिप्पणियों में दिखाई देते हैं। हालांकि विषयक असंगति के कारण इन लेखों में से एक व्यवस्थित सिद्धान्त की संरचना करना बहुत कठिन है। फिर भी, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर उनके समग्र विचारों में अंतर-राज्यीय हिंसा के कारण तथा समाधान पर एक विशिष्ट उपागम की अभिव्यक्ति होती है। गांधी जी की शान्ति की सोच/परिकल्पना (vision) विभिन्न दर्शनग्राही है, जोकि अनेक स्रोत तथा परम्पराओं से ली गई है। यह शान्तिवादी तथा अराजकतावादी दोनों से ही प्रभावित है, विशेषकर रूसी लेखक लिओ टॉलस्टाय तथा अमेरिकी अराजकतावादी हैनरी थोरिओ, तथा हिन्दूवाद, जैन तथा ईसाई दार्शनिक परम्पराओं से। निम्नलिखित भागों में शान्ति के गांधीवादी उपागम के मुख्य विचारों का हम विस्तार से अध्ययन करेंगे।

13.2 शान्ति के गांधीवादी उपागम का आधार

शान्ति के गांधीवादी उपागम को समझने के लिए हमें गांधी के सामान्य सामाजिक व राजनीतिक विचारों के मुख्य तत्वों को समझना होगा। गांधीवाद जीवन व समाज का एक समग्र दर्शन है, जोकि राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर समरूपता से लागू किया जा सकता है। इस दर्शन का जन्म गांधीजी के विचारों और कार्यों से ही हुआ। व्यक्ति, समाज तथा राज्य के विषय में उनके विचारों ने ही शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर उनके उपागम का आधार प्रदान किया।

गांधीजी ने, निर्विवाद रूप से, समाजशास्त्र तथा ज्ञानशास्त्र दोनों को प्रतिपादित किया। गांधीवादी विचारधारा में, आध्यात्मिक तथा सामाजिक सिद्धान्त, धार्मिक मूल्य तथा राजनीतिक योजना सभी का एक संतुलित समावेश है। राजनीति के समक्ष नैतिक प्रधानता, तथा तात्विक के समक्ष आध्यात्मिक प्रधानता गांधीजी के विचारों की मौलिकता है। उनके लिए सत्य ही अंतिम उद्देश्य है तथा अहिंसा उसे पाने का उत्तम साधन। पूर्ण सत्य ही सर्वशक्तिमान तथा सर्वसम्मिलित है। यह दैव्यता के समान है। सत्य से परे न कोई सुन्दरता है न ही कोई कला। गांधीजी ने बड़ी खूबसूरती से उक्ति "ईश्वर ही सत्य है" को "सत्य ही ईश्वर है" में परिणित कर दिया। किसी साध्य को पाने हेतु साधन की शुद्धता भी गांधीवादी उपागम की एक मौलिक कड़ी है। मैक्यावलीवादी विचार 'साध्य ही साधन की सार्थकता है' को नकार कर गांधीजी ने साधन और साध्य को अविच्छेद्य बताया। अच्छाई, अच्छाई का सूत्रधार है तथा बुराई, बुराई का। वास्तव में 'साध्य', 'साधन' से ही उपजता है। गांधी की नज़र में, जिस प्रकार तुम संघर्ष करते हो, और जिस साध्य के लिए करते हो - एक ही बात है। अतः, गांधीवादी दर्शन में किसी भी समस्या का समाधान संघर्ष के साधनों में ही निहित है।